

तारापुर परमाणु ऊर्जा संयंत्र के दो रिएक्टर राष्ट्र को समर्पित करने के अवसर पर प्रधानमंत्री का भाषण

दिनांक 31 अगस्त, 2007

तारापुर

तारापुर परमाणु विद्युत स्टेशन की यूनिट 3 और 4 को राष्ट्र को समर्पित करने के लिए आप लोगों के बीच उपस्थित होकर मैं वास्तव में अपने आप को सम्मानित महसूस कर रहा हूँ।

तारापुर वह जगह है, जहां से भारत ने 1969 में परमाणु ऊर्जा विकास की अपनी तलाश शुरू की थी। तारापुर इस बात का एक शानदार प्रतीक है कि भारत ऐसा कर सकता है। यह इस बात का प्रतीक है कि भारत अपने मार्ग में कई बाधाओं के बावजूद सफलता हासिल कर सकता है। इसलिए, मजबूत और आत्मनिर्भर अर्थव्यवस्था तथा राष्ट्र निर्माण की हमारी यात्रा में तारापुर का विशेष महत्व है। तारापुर परमाणु संयंत्र जवाहर लाल नेहरू और डॉ० होमी भाभा के दूरदृष्टिपूर्ण नेतृत्व तथा इस शानदार दूरदृष्टि को वास्तविकता में बदलने में मदद करने वाले उन परमाणु वैज्ञानिकों और इंजीनियरों को एक श्रद्धांजलि के रूप में खड़ा है। उनकी कड़ी मेहनत ने आज देश को परमाणु प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अग्रणी राष्ट्रों के बीच ला खड़ा किया है। मैं आभारी राष्ट्र की तरफ से इस विशाल राष्ट्रीय प्रयास में शामिल वैज्ञानिकों और इंजीनियरों को नमन करता हूँ।

मैं विशेष रूप से भारतीय परमाणु ऊर्जा निगम और परमाणु ऊर्जा विभाग के उन सभी लोगों, भारतीय उद्योग, हमारी अनुसंधान तथा विकास सुविधाओं और विश्वविद्यालयों को बधाई देना चाहूँगा, जिन्होंने टीएपीएस-3 और 4 का विकास संभव बनाया है। निश्चय ही यह एक उत्कृष्ट प्रयास है, एक ऐसा प्रयास जिसमें पिछले कई दशकों की विपरीत परिस्थितियों और चुनौतियों के बीच हासिल की गई कई विचारधाराओं और प्रक्रियाओं का सहयोग शामिल है। मैं आप सभी को बधाई देता हूँ और आपको नमन करता हूँ। यह प्रत्येक भारतवासी के लिए एक महान गर्व का क्षण है।

परमाणु विद्युत उत्पादन के क्षेत्र में हमारी स्वदेशी क्षमता के विकास ने दिखा दिया है कि जहां चाह है, वहीं राह है।

1960 में हमने एक छोटी सी शुरुआत की थी, आज देश के पास 17 परमाणु रिएक्टर हैं इनमें से अधिकांश दाबित गुरु जल रिएक्टर संयंत्र हैं। मुझे यह कहने में गर्व है कि हमने जो रिएक्टर विकसित किए हैं, वे अत्याधुनिक हैं। जैसे-जैसे हम फास्ट ब्रीडर रिएक्टर और थोरियम रिएक्टरों के विकास में आगे बढ़ते जाएंगे, मुझे इसमें कोई शक नहीं है कि हम इन प्रौद्योगिकियों में भी भविष्य में अन्तर्राष्ट्रीय नेतृत्व हासिल कर लेंगे।

हमारी क्षमताओं को इससे बड़ी श्रद्धांजलि क्या हो सकती है कि टीएपीएस की यूनिट 3 और 4 को निर्धारित समय सीमा से पहले ही और मंजूर लागत के अन्दर ही चालू कर लिया गया है।

हम परमाणु ऊर्जा को इतना महत्व क्यों देते हैं ? मुझे इसमें कोई शक नहीं है कि दीर्घकालिक आर्थिक विकास को निरन्तर बनाए रखना भावी ऊर्जा जरूरतों को पूरा करने की

हमारी योग्यता पर काफी निर्भर करता है। जब एक अरब आबादी वाला भारत जैसा विशाल देश प्रति वर्ष 9 फीसदी की दर से विकास शुरू करता है और इसमें भविष्य में और ऊंची विकास दर की संभावना है, तब ऊर्जा एक महत्वपूर्ण मुद्दा बन जाता है।

हमारी ऊर्जा जरूरतें क्या होंगी, इस बारे में काफी कुछ कहा जा चुका है और लिखा जा चुका है। कुछ सीधी-सादी सच्चाइयां हमारे सामने हैं। पहली, हमारे कोयला, तेल, गैस, पन बिजली संसाधन हमारी जरूरतों को पूरा करने के लिए अपर्याप्त हैं। दूसरी, हमारे पास किसी एक विशेष विकल्प को चुनने की छूट भी नहीं है, क्योंकि इनमें से कोई भी संसाधन अक्षुण्ण नहीं हैं। भारत को ऊर्जा के सभी ज्ञात और संभावित स्रोतों से ऊर्जा की जरूरत है। तीसरी, हम जो भी ऊर्जा पैदा करें, वह न केवल वित्तीय लागत के आधार पर बल्कि हमारे पर्यावरण लागत के आधार पर भी किफायती होनी चाहिए।

सभी उपलब्ध ऊर्जा संसाधनों में से परमाणु ऊर्जा को एक महत्वपूर्ण तथा परमाणु हितैषी ऊर्जा के रूप में स्वीकार किया गया है। आज पूरी दुनिया में परमाणु पुनर्जागरण की चर्चा है और हम इन अन्तर्राष्ट्रीय घटनाक्रमों में पीछे नहीं रह सकते हैं।

यह हमारा सौभाग्य है कि हमारे पास थोरियम के विशाल स्रोत हैं, हमें इनका दोहन करना चाहिए। भारत का त्रि-स्तरीय परमाणु विद्युत कार्यक्रम इस प्रकार हमारी दीर्घकालिक रणनीति का आधार है। यह थोरियम आधारित अद्वितीय प्रौद्योगिकी भविष्य में आर्थिक रूप से व्यावहारिक विकल्प बन जाएगी।

साथ ही, हमारे यूरेनियम संसाधन सीमित हैं। इसलिए, हमने जब से अपना परमाणु विद्युत कार्यक्रम शुरू किया है, तब से बड़ी सावधानी से बन्द ईंधन चक्र तरीके को विकल्प के रूप में चुना है। हमें तेजी से फास्ट रिएक्टर प्रौद्योगिकी का विकास करना है और देश में यूरेनियम के अतिरिक्त संसाधनों का पता लगाने के प्रयासों में तेजी लानी है। सरकार इस बारे में अपना पूरा सहयोग देगी।

देश के त्रि-स्तरीय कार्यक्रम को आगे बढ़ाने में, हमें अपनी क्षमताओं को मजबूत करने की जरूरत है। हमें अपनी यूरेनियम आपूर्ति की अन्य जगहों से प्रतिपूर्ति करने की जरूरत है, हालांकि परमाणु ऊर्जा विभाग ने सीमित संसाधनों की बाधा के अन्तर्गत अधिकतम उत्पादन के लिए सराहनीय कदम उठाए हैं। इसलिए, हमारे परमाणु ऊर्जा उत्पादन कार्यक्रम में ईंधन आपूर्ति की कमी से होने वाले व्यवधान से उत्पन्न अनिश्चितियों को दूर करने के लिए हमें निर्णायक कदम उठाने चाहिए।

देश के उद्योगों की अत्याधुनिक प्रौद्योगिकी तक पहुंच सुलभ होनी चाहिए। इसके लिए हमारे वैज्ञानिकों को वैज्ञानिक विचारों और तकनीकी जानकारी के अन्तर्राष्ट्रीय आदान-प्रदान में शामिल होने के मौके मिलने चाहिए।

हमें परमाणु कारोबार से प्रतिबंध रहित फायदे उठाने के लिए देश का मार्ग प्रशस्त बनाने की जरूरत है। हमने 2020 तक परमाणु ऊर्जा से 20,000 मेगावाट बिजली पैदा करने का सामान्य सा लक्ष्य रखा है। अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग का रास्ता साफ होने से इसे दोगुना किया जा सकता है।

यह सहयोग किसी एक देश पर निर्भर नहीं होगा और हम परमाणु आपूर्तिकर्ता समूह (एनएसजी) में कई देशों से आपूर्ति प्राप्त करेंगे। इनमें अमरीका, रूस, फ्रांस और जापान भी

शामिल हैं। लेकिन, इन देशों तथा अन्य देशों के साथ हमारा अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग तब तक प्रभावी नहीं हो सकता, जब तक कि परमाणु आपूर्तिकर्ता समूह अपने दिशा-निर्देशों को भारत के साथ परमाणु कारोबार सुलभ करने के योग्य न बना लें। स्वयं एनएसजी ने यह स्पष्ट कर दिया है कि जब तक आईईए के साथ भारत विशिष्ट सुरक्षा उपाय समझौते को अंतिम रूप नहीं दे दिया जाता, तब तक वे ऐसा नहीं करेंगे।

जब ये कदम तथा अन्य कदम उठा लिए जाएंगे, तब भारत परमाणु आपूर्तिकर्ता समूह के सभी 45 सदस्यों के साथ असैन्य परमाणु सहयोग शुरू कर सकता है। यह पिछले कुछ दशकों से भारत को अन्तर्राष्ट्रीय बिरादरी से अलग रखने के युग के समापन का संकेत होगा। भारत अब एक अत्यन्त महत्वपूर्ण देश है और उसे इस महत्वपूर्ण क्षेत्र में अन्तर्राष्ट्रीय मुख्यधारा से बाहर नहीं रखा जा सकता।

मुझे अपने वैज्ञानिकों और इंजीनियरों पर पूरा भरोसा है और मैं मानता हूँ कि हमारे कार्यक्रमों पर असमान प्रतिबंधों और बेड़ियों के हटने से हम अपनी स्वदेशी क्षमताएं बढ़ा लेंगे। हम ऐसा कुछ भी नहीं करेंगे, जिससे कि अपने प्रयासों से समस्याओं को हल करने की हमारी क्षमताओं को चोट पहुंचे। आत्मनिर्भर बनने की ओर हमारी प्रगति, हमारी नीति का प्रमुख सिद्धान्त बनी रहेगी। एक मजबूत ऊर्जा कार्यक्रम हमारे महत्वपूर्ण हित में है और यह हमारे वैज्ञानिक विकास, ऊर्जा जरूरतों तथा राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण है। एक राष्ट्र के रूप में यह हमारी क्षमताओं और ताकत को बढ़ाएगा।

आपके समर्पण और हासिल की गई उपलब्धियों को देखकर, मुझे विश्वास है कि आने वाले वर्षों में हमारी स्वदेशी प्रौद्योगिकी क्षमताओं का विकास ही होगा। हमारे देश का यह सौभाग्य है कि उसके पास परमाणु कार्यक्रम के विकास को रास्ता दिखाने के लिए डॉ० अनिल काकोडकर जैसी सुप्रसिद्ध तथा अद्वितीय हस्ती थी।

अन्त में, हमारे परमाणु उद्योग के शानदार सुरक्षा रिकार्ड के लिए मैं आप सभी को बधाई देता हूँ। हम सभी को आप पर गर्व है।

इन शब्दों के साथ, मैं भारत के पहले 540 मेगावाट परमाणु विद्युत संयंत्रों वाले तारापुर परमाणु विद्युत स्टेशन की तीसरी तथा चौथी इकाई को इस महान देश के लोगों की सेवा में समर्पित करता हूँ।
